डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 04-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद का प्रतिपाद्य विषय

'यास्क' ने ऋग्वेद संहिता की समस्त ऋचाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया है-

1. प्रत्यक्ष कृत
2. परोक्ष कृत
3. आध्यात्मिक

'घाटे महोदय' ने भी ऋग्वेद के समस्त सूक्तो की तीन कोटियाँ निर्धारित किये हैं।

1. धार्मिक सूक्त
2. दार्शनिक सूक्त और
3. धर्मनिरपेक्ष सूत्र

जर्मन विद्वान विण्टरनिट्ज, मैक्डॉनल और भारतीय विद्वान बलदेव उपाध्याय आदि अनेक विद्वानों ने भी इस विषय पर विचार किए हैं। इन सभी विद्वानों के द्वारा ऋग्वेद के प्रतिपाद्य विषय का जो विवेचन किया गया है उसको सारांश रूप में यहां हम प्रस्तुत करते हैं । ऋग्वेद के विषय को संक्षेप में अधोलिखित शीर्षकों में प्रस्तुत किया जाता है।

1. **काव्यात्मक स्तुतियाँ एवं प्रार्थनाएँ -** ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त स्तुतिपरक है। स्तुतियों के साथ ही ऋग्वेद में प्रार्थनाएँ भी है। ऋग्वेद का ऋषि जब किसी देवता की स्तुति करता है तो उसके अंतिम भाग में वह देवता से गायों, वीर पुत्रों और अन्न आदि वस्तुओं को देने की प्रार्थना भी करता है। यद्यपि स्तुतियों में अग्नि,इन्द्र,वरुण और सोम की स्तुतियाँ ही अधिक हैं। किंतु सूर्य, पर्जन्य, मरुत् और उषा से संबंधित स्तुतियाँ अत्यधिक काव्यात्मक है । काव्यत्व की दृष्टि से उषा सूक्त सर्वोत्कृष्ट माना जाता है।
2. **आख्यान सूक्त या संवाद सूक्त -** ऋग्वेद में लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं, जो काव्यत्व एवं नाटकत्व के बहुत समीप है। इन सूक्तों में कुछ प्राचीन कथाओं को, संवादों में प्रस्तुत किया गया है। इनमें प्राचीन कथाओं के होने से 'ओल्डनवर्ग' ने इन सूक्तों को आख्यान सूक्त कहा है। दूसरी ओर, संवादों में होने के कारण विण्टरनिट्ज इन्हें 'संवाद सूक्त' कहना उपर्युक्त मानते हैं ।पश्चात्य विद्वानों के अनुसार, बाद में

विकसित नाटकीय काव्य तथा महाकाव्य के बीज, इन्हीं संवाद सूक्तों या आख्यान सूक्तों में निहित है। ये सूक्त प्रमुखत: ऋग्वेद के दशम मंडल में संकलित है।

3. **दार्शनिक सूक्त या सृष्टि सूक्त-** ऋग्वेद के लगभग 12 सुक्त ऐसे हैं जिनमें उपनिषदों में विकसित उच्च कोटि के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं। इन सूक्तों में दशम मंडल में आए 'पुरुष-सूक्त', 'हिरण्यगर्भ सूक्त' तथा 'नासदीय सूक्त' का विशेष महत्व है । 'पुरुष -सूक्त' में सभी पदार्थों का रचयिता प्रजापति को माना गया है और 'नासदीय सूक्तों' में सभी पदार्थों की उत्पत्ति सलिल से मानी गई है । इन सूक्तों में सृष्टि का विकास कहीं असत् से सत् के रूप में और कहीं अव्यक्त से व्यक्त के रूप में दिखलाया गया है।
4. **तांत्रिक सूक्त या ऐन्द्रजालिक सूक्त -** ऐसे सूक्तों की संख्या ऋग्वेद में 12 ही है । इनमें रोग भगाने के लिए, दरिद्रता दूर करने के लिए, शत्रु पर विजय पाने के लिए, कीट आदि हानिकारक जीवो एवं कुदृष्टि जैसी अपकारक शक्तियों को दूर करने के लिए मंत्र- तंत्र आदि दिए गए हैं। इनकी विषय सामग्री अथर्ववेद से मिलती जुलती है। विंटरनिट्ज के अनुसार ऋग्वेद का 'मण्डूक सूक्त' भी इसी कोटि का है।
5. **अंत्येष्टि सूक्त-** ऋग्वेद में 5 अंत्येष्टि सूक्त है। इन सूक्तों की विषय वस्तु को देखने से ज्ञात होता है कि उस समय भी शव को जलाया जाता था। दशम मंडल के 16वें सूक्त में शव के चिता पर रखे जाने के बाद प्रेत के यमलोक पहुंचने का वर्णन देखने को मिलता है।
6. **धर्मनिरपेक्ष सूक्त या लौकिक सूक्त-** ऋग्वेद में लगभग 20 सूक्त ऐसे हैं जिनमें सामाजिक रीति-रिवाजों का, संरक्षकों की उदारता का तथा जीवन में होने वाली व्यावहारिक और नैतिक समस्याओं का उल्लेख है । इसमें भी विवाह सूक्त (10 ,85) का विशेष महत्व है। धर्म से स्वतंत्र इन अलौकिक सूक्तों में महत्वपूर्ण विषय भौतिक ही है । इन्हीं सूक्तों में एक श्रम-गीत भी है (9/112) ।
7. **दान स्तुतियाँ-** यद्यपि ऋग्वेद में दान स्तुति-परक सूक्तों की संख्या के विषय में मतभेद है। विण्टरनिट्ज के अनुसार ऐसे सूक्त 40 है। इन सूक्तों में पुरोहितों ने अपने यजमान की दानशीलता की प्रशंसा की है । दशम मंडल का एक सूक्त तो (10/117) पूर्ण अंशों में दान-स्तुति ही है। शेष स्थलों पर प्राय: याज्ञिक-सूक्तों के अंत में 4,-5 मंत्रों में ही, दान स्तुति है।
8. **उपदेशात्मक सूक्त-** ऋग्वेद में 2-4 ऐसे उपदेशात्मक सूक्त भी हैं जिनमें बाद में विकसित सूक्ति प्रधान काव्य के बीज दिखलाई पड़ते हैं ।
9. **द्यूत सूक्त -** ऋग्वेद के द्यूत सूक्त में जुआरी की मनोदशा का और साथ ही उसकी दुर्दशा का सुंदर चित्रण हुआ है। इस सूक्त से द्यूत क्रीड़ा की प्राचीनता भी सिद्ध होती है ।
10. **पहेलियाँ-** ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त भी है जिनका संबंध वैदिक पहेलियों से जोड़ा जाता है।

इस प्रकार ऋग्वेद के प्रतिपाद्य विषय को देखने से स्पष्ट होता है कि इसमें विविध विषयों से संबंधित सूक्त संग्रहित हैं। जिससे हमें ऋग्वेद की प्राचीनता का ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही लौकिक एवं व्यावहारिक विषयों की जानकारी प्राप्त होती है।